दादा भगवान परिवार का

दिसम्बर २०१९

शुल्क प्रति नकल :₹ २०/-

# अक्रम एक्सप्रेस

## Sweet Sixteen

## Nirumaa...

# Sweet Sixteen Niruma

## संपादकीय

बालमित्रों,

इस महीने में हमारे लाडले नीरू माँ के ७५ साल पूरे हो गए हैं। जब वे छोटे थे तब उनमें बहुत सारी खूबियाँ थीं, जिन्हें जानेंगे तो हमें बहुत आश्चर्य होगा कि ओहोहो.... नीरू माँ ऐसे थे....

इस अंक में उनके बारे में अच्छी मज़ेदार बातें दी गई हैं। जिन्हें पढ़ने में मज़ा आएगा।

तो आइए नीरू माँ के बारे में जानते हैं और उनके जैसा बनने का निश्चय करते हैं।

और हाँ... उन्हें बर्थडे विश करते हैं.....

हेपी बर्थडे टू नीरू माँ.....

हेपी बर्थडे टू यू ....

- डिम्पल मेहता


Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.



© 2019, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved


अक्रम एक्सप्रेस


वर्ष : ७ अंक : ९
अखंड क्रमांक : ८२
दिसम्बर २०१९



संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०९००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org



वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

# नीरू माँ का बचपन

**जन्म :** औरंगाबाद शहर में अमीन परिवार में १९४४ मँ हुआ था।

**परिवार :**

माता-पिता और पाँच भाइयों के बीच नीरू माँ इकलौती बेटी थी।

नीरू माँ की मदर को बेटी की बहुत इच्छा थी। लेकिन उनके घर एक के बाद एक पाँच पुत्रों का जन्म हुआ। इसलिए उन्होंने बेटी के लिए मन्नत रखी थी। उसके बाद नीरू माँ का जन्म हुआ। उनके माता-पिता की खुशी का पार नहीं था। उस खुशी को मनाने के लिए उनके फादर ने औरंगाबाद शहर में बेन्ड-बाजे वाले को बुलाया था। नीरू माँ छोटी थीं तब बहुत हेल्दी थी।

## बचपन का नाम :

नीरू माँ के फादर का सिनेमा हॉल का बिज़नेस था। उनके खुद के बहुत थिएटर थे। नीरू माँ का जन्म हुआ, तब उनके थिएटर में "तानसेन" पिक्चर चल रही थी। उस फिल्म में जो हिरोइन थी उसका नाम तानी था। इसलिए नीरू माँ को सभी तानी कहकर बुलाते थे।

## सच्चा नाम :

उनका सच्चा नाम निरंजना था। लेकिन सभी उन्हें नीरू कहकर बुलाने लगे। वास्तव में जन्म पत्री के अनुसार उनका नाम कपिला था।

## दिखाव और पहनावा :

जब नीरू माँ छोटी थीं तब दिखने में हेल्दी थीं। शरीर भरावदार और मोटा गोलमटोल था। उनके बाल लंबे थे।

वे बहुत स्टाइलिश थीं। जब वे छोटी थी तब फ्रॉक पहनती थी और बड़े होने पर स्कर्ट-ब्लाउज पहनती थीं। घर में हमेशा ब्लाउज और लंबा लहँगा पहनती थी। कॉलेज के फाइनल ईयर में साड़ी ही पहनती थीं।

## पढ़ाई :

नीरू माँ छ - सात साल की होंगी, तब उन्हें स्कूल में दाखिल किया गया था। पहले दिन उनके पिता स्कूल में बेन्ड बाजे के साथ लेकर गए थे। नीरू माँ एक से चौथी कक्षा तक गुजराती मीडियम में, पाँच से दसवीं कक्षा तक मराठी मीडियम में और कॉलेज इंग्लिश मिडियम में पढ़ीं थी। स्कूल कि पढ़ाई उन्होंने मुंबई में की थी, कॉलेज औरंगाबाद में किया था और फिर और मेडिकल की पढ़ाई मुंबई में की थी। वे गायनेकॉलोजिस्ट स्त्री रोग विशेषज्ञ डिप्लोमा की पढ़ाई की थी। उसके बाद एम.डी. में एडमिशन लिया।

पहले से ही पढ़ने में उनका फर्स्ट क्लास गोल्ड मेडल ही आता था। एम.बी.बी.एस. किया उसमें भी फर्स्ट क्लास, कॉलेज में भी फर्स्ट क्लास।

## यादशक्ति :

नीरू माँ की यादशक्ति और आई.क्यू. बहुत पावरफुल था। परीक्षा के समय हमेशा उनकी सहेली पढ़ती और वे लेटे-लेटे सुनती! और वह फिर भी उन्हें सब याद रह जाता था। उन्हें खुद पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। एक बार में ही सब याद रह जाता।

## पर्सनालिटी :

बचपन से ही वे बहुत बोल्ड थीं। वे किसी से भी डरती नहीं थी, उल्टा लोग उनसे बहुत डरते थे। खास करके कॉलेज के लड़के। कोई लड़का ऐसा-वैसा बोलता तो वे डाँट लगा देती थीं। वे ऐसा मानती थीं कि "मैं अमीन परिवार की इसलिए मेरा चरित्र बहुत शुद्ध होना चाहिए।"

नीरू माँ की ऐसी बोल्डनेस की वजह से कॉलेज में सभी ने उनका नाम "भारत माता" रख दिया था।

## रवेल :

नीरू माँ और उनके भाइयों को बचपन में कुत्ता बहुत अच्छा लगता था। गली में से नए जन्में हुए पिल्लों को घर ले आते। यह देखकर उनकी मम्मी व्याकुल हो जाती और पूछती कि "इन सभी को कौन संभालेगा" तो नीरू माँ और उनके भाई कहते कि "हम संभालेंगे।" ऐसा कहकर रखते।

# शोख:

## कुत्ते का शोख :

नीरू माँ और उनके भाइयों को बचपन में कुत्ता बहुत अच्छा लगता था। गली में से नए जन्में हुए पिल्लों को घर ले आते। यह देखकर उनकी मम्मी व्याकुल हो जाती और पूछती कि "इन सभी को कौन संभालेगा" तो नीरू माँ और उनके भाई कहते कि "हम संभालेंगे।" ऐसा कहकर रखते।

## गाने का शोख :

नीरू माँ को बचपन से ही गाने का बहुत शोख था। रेडियो में लता मंगेशकर का गीत जब भी आता तब नीरू माँ उसे सुनते-सुनते उसके साथ गातीं। उन्हें ऐसा ही लगता कि उनका आवाज़ लगा मंगेशकर जैसा ही है। उनके भाई उन्हें बहुत चिढ़ाते कि "तू भैंसासुर जैसा गाती है। बंद कर और मुझे लता मंगेशकर को सुनने दे।" फिर भी वे गाती ही थी।

## हनुमान जी के साथ कनेक्शन!

नीरू माँ के स्कूल के रास्ते में हनुमान जी का मंदिर आता था। और कहीं नहीं हनुमान जी के मंदिर में जाकर वे रोज़ प्रार्थना करती, "हे भगवान, मुझे पहले नंबर पास करना। मुझे डॉक्टर बनना है। सेवा करने के लिए बनना है, पैसे कमाने के लिए नहीं।" और दूसरी प्रार्थना करती कि, "हे भगवान, सारे जगत् के लोगों को सुखी करना।" उनका अंदर ऐसा बटन तो दबा ही हुआ होता कि "सारे जगत् में मेरा नंबर तो आ ही जाता है न!" कभी स्कूल जाने में देर हो जाती तो भगवान से मन में ही कह देती, "सॉरी भगवान आई एम लेट टु डे।" और रोज़ की प्रार्थना मन में बोलते-बोलते आगे निकलते जाती। लेकिन प्रार्थना ज़रूर करती।

मेडिकल में एडमिशन लेने के बाद नीरू माँ ने देखा कि जब भी कोई सीरियस ऑपरेशन करना होता तब लेडी डॉक्टर्स को अंदर बहुत घबराहट रहती। सभी सीरियस ऑपरेशन के समय मानता माँगते कि पेशन्ट बच जाएगा तो वे हनुमान जी को तेल, नारियल और सिंदूर चढ़ाएँगे। लेकिन नीरू माँ ने ऐसी मानता कभी नहीं माँगा।

## संस्कृत बहुत पसंद थी!

नीरू माँ को संस्कृत विषय बहुत पसंद था। संस्कृत में मार्क्स भी अच्छे आते थे। करीब पचानवे-सतानवे जितना मार्क्स आते थे! लेकिन उन्हें छः साल की उम्र से ही डॉक्टर बनने के विचार आते रहते थे। इसलिए, मेट्रिक के बाद साइन्स की लाइन ली थी, फिर संस्कृत लेंग्वेज का टच नहीं रहा।

बाल
त्व
शक्ति
परम
कवि
नो
मूर्ति
टिव
पूर्णा
पाँज़ि
धारणा
वात्सल्य
विनय
राउन्ड
ऑल
बल
अन्न
फलेक्सी

# चलो खेले....

नीरू माँ के दिव्य गुणों के अक्षर नीचे दिए हुए हार्ट में बिखरे हुए हैं। दो हार्ट के अक्षर जोड़कर एक गुण का शब्द बनेगा। तो चलों, जल्दी से नौं गुणों का लिस्ट बनाते हैं। और नीचे दिए गए गुणों के वर्णन के सामने हरएक रिक्त स्थानों में योग्य गुण लिखिए।

टिव, मूर्ति, बाल, त्व, पॉज़ि, विनय, नो, फलेक्सी, वात्सल्य, शक्ति, बल, पूर्णा, धारणा, अन्न, परम, कवि, ऑल, राउन्ड।

| नंबर | गुण | वर्णन |
|---|---|---|
| १ | _____ | पूज्य नीरू माँ के संपर्क में जो कोई भी आता उसे नीरू माँ के वात्सल्य का अनुभव होता ही। और उनके प्रेम से वह सर्व समर्पण करके, उनके साथ जुड़ जाता था। |
| २ | _____ | पूज्य नीरू माँ कभी किसी को भी प्रसादी लिए बना जाने नहीं देती थीं। उन्हें पता चलना चाहिए कि उसे यह पसंद है कि तुरंत ही वैसे ही टेस्ट का खुद ही बनाकर खिलाती थी। |
| ३ | _____ | पूज्य नीरू माँ एकदम फ्लेक्सिबल थी। किसी भी बात में उन्होंने कभी पकड़ नहीं पकड़ा। |
| ४ | _____ | पूज्य नीरू माँ का मन बचपन से ही राजश्री था। कोई कहे कि यह चीज़ बहुत अच्छी हैं, तो नीरू माँ तुरंत ही उसे वह चीज़ दे देती। |
| ५ | _____ | बचपन से ही पूज्य नीरू माँ की ग़ज़ब की धारण शक्ति थी। कोई भी बात एक ही बार सुनने से, उन्हें याद रह जाती थी। |
| ६ | _____ | पूज्य नीरू माँ की ऐसी विशेषता थी कि कभी भी, किसी भी व्यक्ति के लिए या किसी भी बात के लिए, चाहे कोई भी शब्द दिया जाए तो उसे छंद, राग, ताल में सेट करके, पूरा भक्ति, पद लिख सकती थी। |
| ७ | _____ | जैसे हनुमान जी को श्री राम भगवान के प्रति अन्नय प्रेम भक्ति और परम विनय था, वैसा ही परम विनय नीरू माँ को दादाश्री के प्रति था। |
| ८ | _____ | पूज्य नीरू माँ किसी भी कठिन संयोग में अंत तक पॉज़िटिव ही रहती। जिससे कुदरत भी उनका साथ देती और रिज़ल्ट पॉज़िटिव ही आता। |
| ९ | _____ | पूज्य नीरू माँ के पास कई प्रकार की कुशलताए थी। वे कवयित्री की तरह रचना भी करती और लीडर की तरह मिशन भी आगे बढ़ाती। सेवक की तरह सेवा भी करती और ज्ञानी की तरह ज्ञान भी परोसती। |

# My Daily Task

1. फ्रेन्ड के साथ अपनी चीज़ें शेयर करूँगा।
2. मम्मी-पापा की हेल्प करूँगा।
3. बड़ों के पैर छूऊँगा।
4. कोई एक आरती करूँगा।
5. फ्रेन्ड के साथ झगड़ा नहीं करूँगा।
6. आज मैं झूठ नहीं बोलूँगा।
7. आज मोबाइल use नहीं करूँगा।
8. बड़ो की हेल्प करूँगा।
9. ३० मिनट ही टी.वी. देखूँगा।
10. चालू क्लास में बात नहीं करूँगा।
11. मंदिर जाऊँगा।
12. फैमिली के साथ गेम्स् खेलूँगा।
13. प्लान्ट में पानी डालूँगा।
14. फ्रेन्ड के गुणों की तारीफ करूँगा।
15. खाना खाते समय बातें नहीं करूँगा।
16. पाँच बार त्रिमंत्र बोलूँगा।

17
गार्डन में खेलने जाऊँगा।

18
नया क्राफ्ट बनाऊँगा।

19
आज जो भी खाने में होगा उसे राज़ी-खुशी से खाऊँगा।

20
स्कूल बेग साफ करूँगा।

21
पशु-पक्षियों को खाना दूँगा।

22
डान्स करूँगा।

23
बिजली (पावर) का बचाव करूँगा।

24
भूलों की माफी मागूँगा।

25
रास्ते पर दिखने वाला कचरा साफ करूँगा।

26
टीचर के पैर छूऊँगा।

27
राज़ी-खुशी से मुझसे किसी जीव-जंतु की हिंसा नहीं हो उसका खास ध्यान रखूँगा।

31
मेरी जो हेल्प करेगा उसे Thank You Card दूँगा।

28
खाना खाकर थाली उठऊँगा।

29
नहाकर बाथरूम धोऊँगा।

30
मम्मी की रसोई में मदद करूँगा।

I Year challenge नीरू माँ के birthday के महीने में कुछ नया तय करते हैं। आज से एक साल तक हम हररोज़ कोई एक छोटा Task करके सुख की दुकान खोलेंगे। आज से एक छोटा Task करके सुख की दुकान खोलेंगे। यहाँ कल 31 अलग-अलग Task दिए हैं। तो चलिए हम हर रोज़ एक साल तक एक नया Task करके यह I Year challenge पूरा करते हैं।

कौंस में लिखे हुए शब्द के अक्षरों को ठीक तरह से जोड़कर शब्द बनाइए और उस शब्द को नीचे दी हुई भावनाओं के वाक्य को रिक्त स्थानों में लिखिए।

# चलो खेलें....

1. दादाश्री की भावना थी कि लोगों के धर्म-संप्रदाय के मतभेद मिटें, इसलिए ---------- (क्ष ती पा ष्प नि) त्रिमंदिरों का निर्माण हो। यह भावना नीरू माँ के मार्गदर्शन में साकार हुई।

2. दादाश्री की भावना थी कि ऐसा कोई नगर हो जहाँ मोक्ष के ध्येय वाले सभी महात्मा साथ में रह सकें। नीरू माँ ने दादाश्री की इस भावना को अडालज में ---------- (ध मं र सी) -------- (टी सि) के रूप में साकार किया।

3. नीरू माँ ने बड़े-बड़े तीर्थधामों में यात्रा का आयोजन करके महात्माओं से भक्ति करवाई। दादाश्री कहते "हमें काश्मीर जाना अच्छा लगेगा।" नीरू माँ ने महात्माओं को ---------- (श्मी र का) यात्रा करवाकर दादा की भावना पूरी की।

4. दादाश्री की भावना थी कि जगह-जगह सीमंधर स्वामी की भजना हो। नीरू माँ ने सभी धर्म-संप्रदाय के लोगों को सीमंधर स्वामी की सच्ची ---------- (चा न ह प) करवाई और लोगों के घर सीमंधर स्वामी की मूर्ति की स्थापना करवाई।

5. नीरू माँ ने दादाश्री को चौदह ---------- (णी प्र वा आ) तैयार करने का वचन दिया था, उसे नीरू माँ पूरा करके ही रहे।

जानते हो कि नीरू माँ ने आज की यंग जनरेशन का स्टडी करके, उनके लिए क्या कहा है? चलिए, नीचे दी हुई चाबियों का उपयोग करके, नीरू माँ के कहे हुए शब्द डीकोड करते हैं।

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र | त | ट | ष | र्गु | षा | रु | ष्यो | व | ट | दे | रा | ल | न्ड | ऊँ |

उनमें बहुत सारी__ची चीज़े हैं, सीधा__ __गति में से उतरे हुए ऐसे__र हैं, उनमें मे__-ते__,
15 11 9 8 12 12
कप__, झू__ किसी को छ__ लूँ यह, इस जनरेशन में ये दु__ण नहीं देखने मिलते। क__य,
10 3 13 5 6
बै__-वै__, ऐसा नहीं मिलेगा। सभी ऑ__न माइ__वाले हेल्दी माइ__ की जनरेशन है।
1 1 4 14 14

मुंबई में ११२ वी जन्म जयंती के समय, बरसात के अचानक आगमन से कई तकलीफें आईं। कई महात्माओं को कई तरह से एडजस्टमेन्ट लेने पड़े थे। लेकिन यह प्रसंग महात्माओं के लिए यादगार बन गया क्योंकि ज्ञान के पावर के साथ साथ उन्होंने ज्ञानी का राज़ीपा भी प्राप्त किया। मित्रों, क्या आपके पास या आपके पेरेन्टस् के पास जन्म जयंती के ऐसे यादगार प्रसंग है आपके अनुभव हमारे साथ ज़रुर शेर करना।

Email : akramexpress4kids@gmail.com

# मीठी यादें

फ्रेन्डस्, करीब आपकी उम्र की ही हूँगी, जब हम पहली बार नीरू माँ से मिले। आज हम सभी अलग-अलग फिल्ड में कार्यरत हैं। हममें से कोई डॉक्टर है तो कोई कॉलेज़ प्रोफेसर, कोई डेन्टिस्ट है तो कोई क्रिएटिव हेड। हमारी सक्सेस तो नीरू माँ के प्रेमभरे घड़तर का ही परिणाम है। नीरू माँ के साथ की हमारी मीठी मेमरीज हमारा सबसे अमूल्य ट्रेसर है। हमारे अमूल्य ट्रेसर के कुछ रत्न आपके साथ शेयर कर रही हूँ।

मैं पाँच साल की थी तब नीरू माँ से पहली बार मिली। तब से ही शी वॉज एवरीथिंग फोर मी। नीरू माँ अर्थात् मेरे लिए सबसे ऊपर।

## यही तेरे मामा का घर

फर्स्ट टाइम दादा दर्शन गई, तब नीरू माँ ने मुझे बुलाया। उन दिनों में मेरे नाना-नानी वहाँ शिफ्ट हुए थे। दादा-दर्शन में नीरू माँ के साथ मेरी मुलाकात आज भी मेरे दिल में उतनी ही फ्रेश है। नीरू माँ ने मुझसे प्रेम से कहा, "वेकेशन में बच्चे मामा के घर जाते हैं न, तो अब से यही तेरे मामा का घर!" नीरू माँ के ये शब्द मुझे बहुत ही टच कर गए।

## मेरी ऑपन-डायरी

बचपन में मुझे बहुत बोलने की आदत थी। लेकिन, किसी को मेरी बातें सुनने में इन्टरेस्ट नहीं था। मुझे याद नहीं है कि नीरू माँ ने मुझे कभी इग्नोर किया हो। मेरे लिए वे ऑपन डायरी थी। मेरी पागलपन से भरी सभी बातें वे सुनते थे।

## मेरे लिए टिफिन बनाया

सुबह के साड़े छः बजे थे। मेरी मम्मी टिफिन के लिए भाखरी का चूरमा बना रहीं थी। नीरू माँ ने यह देखा और बोलीं, "आज में बच्चों के लिए नास्ता बनाऊँगी।" नीरू माँ ने सुबह-सुबह मेरे लिए गरमा-गरम पोहे बनाए और मुझे टिफिन पेक करके दिया।

# इस तरह नीरू माँ ने ली साईन

बचपन में मुझे नाखून बढ़ाकर नेलपोलिश करने का बहुत शोख था। लेकिन मम्मी कभी भी नाखून बढ़ाने नहीं देती। एक बार भूल से बढ़ गए और नीरू माँ की नज़र में आ गए। उन्होंने प्रेम से पूछा, "तुम्हें बहुत अच्छा लगता है नाखून बढ़ाना?" मैंने "हाँ" कहा। मुझे बिल्कुल भी डाँटे बिना उन्होंने समझाया कि एनिमल्स के नाखून लंबे होते हैं। लेकिन हम तो ह्युमन हैं। यदि लंबे नाखून रखेंगे तो उसमें कचरा जमा होगा और वही हाथ से हम खाना खाएँगे उससे पेट में जाएगा। नेलपोलिश पेट में जाएगी वह भी अच्छा नहीं कहा जाएगा। और फिर प्रेमपूर्वक मुझसे प्रोमिस माँगा कि मैं नाखून नहीं बढ़ाऊँगी और नेलपोलिश नहीं करूँगी। मैंने तुरंत नीरू माँ को हाँ कह दिया, लेकिन आदत छूटने में देर लगी। जितनी बार मैं नेलपोलिश लगाती, उतनी बार मुझे याद आया कि नीरू माँ को अच्छा नहीं लगेगा। और बस, धीरे-धीरे मेरी आदत छूट गई।

इस तरह, ज़बरदस्ती या डाँटकर नहीं, परंतु लॉजिकली समझाकर नीरू माँ ने मुझसे साइन ले ली और मुझे खराब आदत से छुड़वा दिया।

# नीरू माँ की दी हुई प्रेम प्रसादी

यह मेरा फेवरिट प्रसंग है। मुंबई में पर्युषण-पारायण का प्रसंग चल रहा था। सत्संग में मम्मी ने नीरू माँ से कम्प्लेन की कि मैं ठीक से खाती नहीं हूँ। इतनी नाजुक दिखती हूँ कि एइट में होते हुए भी ऐसी लगती थी।

ऐसा हुआ कि उस दिन एक आन्टी नीरू माँ के लिए सत्संग में ढोकला लाई थी। एक आप्तपुत्र भाई ने नीरू माँ से कहा, नीरू माँ स्टेज के पीछे ढोकला का डिब्बा पड़ा हुआ है। यह सुनकर नीरू माँ खुश हो गए। और मुझे स्टेज पर बुलाया। आप्तपुत्र ने मुझे ढोकला का डिब्बा दिया और उसे लेकर मैं नीरू माँ के पास स्टेज पर गई।

नीरू माँ ने मुझे प्यार से अपने हाथ से ढोकला खिलाया, मैं नीरू माँ को खिलाने गई तब नीरू माँ ने मुझसे प्रेम से कहा कि ढोकला सिर्फ तेरे लिए ही हैं। नीरू माँ का खिलाया हुआ आधा ढोकला मेरे हाथ में ही था जैसेही मैं स्टेज पर से नीचे उतरी, तो आगे बैठी हुई आन्टी ने मुझसे नीरू माँ ने कड़क होकर उन आन्टियों से कहा, बच्ची को खाने दो। उसके लिए ही है यह प्रसादी फिर मुझसे प्रेम से कहा, मेरी लाज रखना और ठीक से खाना।

यह प्रसंग मेरे हृदय को ज़बरदस्त स्पर्श कर गया। नीरू माँ द्वारा की हुई संभाल और मुझे दी हुई प्रेम प्रसादी मैं कभी नहीं भूलूँगी।

# खुले वात्सल्य के द्वार...

उस दिन वात्सल्य खुला था। नीरू माँ ने हम सभी को वात्सल्य में बुलाया। हम नीरू माँ के रूम के बाहर के गार्डन एरिया में उनके साथ बैठे थे। नीरू माँ बोलीं, "अब तो मेरा घर बड़ा बन गया। तो गंदा भी जल्दी हो जाएगा न? क्या आप सभी साफ-सफाई करने में मेरी हेल्प करोगे? महीने में एक बार आना।" हम सभी लड़कियों ने कहा, "हाँ, नीरू माँ हम आएँगे।" एक लड़की बोली, "नीरू माँ, हम महीने में एक बार नहीं, हफ्ते में एक बार आएँगे।"

"सचमुच?" नीरू माँ खुश हो गई, "ठीक है तो, हर रविवार को आकर वात्सल्य की खिड़कियाँ साफ करना।" और बस, तभी से हर रविवार को करीब दस बजे हम वात्सल्य की खिड़कियाँ साफ करने जाते। सफाई खत्म होने के बाद, नीरू माँ हमें अपने पास बुलाती और हमारे साथ पंद्रह-बीस मिनिट बातें करती और फिर हम सभी को चॉकलेट देती।

आज समझ में आता है कि उस सेवा का अवसर देकर, नीरू माँ ने हमें कितना कुछ ज्यादा दे दिया।

# माय फ्रेन्ड नीरू

## डॉ. सविताबेन पालट (औरंगाबाद)

**मेडिकल कॉलेज में नीरू माँ की सबसे क्लोज़ फ्रेन्ड ने नीरू माँ के बारे में क्या कहा? चलिए, जानते हैं।**

मेडिकल कॉलेज में नीरू माँ की सबसे क्लोज़ फ्रेन्ड ने नीरू माँ के बारे में क्या कहा? चलिए, जानते हैं।

"आई एम सो फोर्च्युनेट कि मुझे नीरू जैसी फ्रेन्ड मिली। हम बहुत क्लोज़ थे। एक दूसरे के साथ सब शेयर करते थे। ऐसा कभी नहीं हुआ कि हमारा झगड़ा हुआ हो और हमने एकदूसरे के साथ बात करना बंद कर दिया हो। नीरू तो फ्रेन्ड के लिए कुछ करे ऐसी थी। उसका हेल्पिंग नेचर था और सभी के साथ अच्छा रिलेशन था। एनाटोमी वॉर्ड के सर्वन्ट के साथ भी अच्छे रिलेशन थे।"

नीरू पढ़ती तो थी, लेकिन साथ-साथ सभी के साथ हँसी-मज़ाक और छेड़खानी भी करती। उसकी कंपनी में सभी को मज़ा आता। खास बरसात की सिज़न में हम पकोड़े खाते। कई बार हरे चने लाकर, साइकल पर बैठकर खाते।

"नीरू जैसी फ्रेन्ड तो भाग्य से ही मिलती है। दुनिया की वह मदर होगी, लेकिन मेरी तो वह फ्रेन्ड थी और फ्रेन्ड ही रहेगी।"

# परम पूज्य दादा भगवान की ११२ वीं जन्म जयंती महोत्सव की झलक

पज़ल के जवाब : तीरू माँ ने की दादा की भावनाएँ साकार

१) वात्सल्यमूर्ति २) अन्नपूर्णा ३) प्लेक्सिबल ४) नोबल ५) धारणाशक्ति ६) कवित्व ७) परम विनय ८) ऑल राउन्ड

१) निष्पक्षपाती २) सीमंधर सिटी ३) काश्मीर ४) पहचान(परिचय) ५) आप्तवाणी

Akram Express

December 2019
Year : 7, Issue : 9
Conti. Issue No.: 82

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081\2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

*अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना*

*१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद* **#** *हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा.* **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

*२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर रूरू करें।*

*१. कच्ची पावती नंबर या* **ID No.,** *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

*Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation*
*Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025*